ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 236-238
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

# संस्कारों का महत्त्व एवं परिवर्तन (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

सुनील कुमार यादव
ग्राम– कुम्धी, पो० – तिलैया–गया (बिहार) भारत

Received-18.12.2022, Revised-16.12.2022, Accepted-20.12.2022 E-mail: akbar786ali888@gmail.com

***सारांशः*** ***हिन्दूओं ने अपने व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन को सुव्यवस्थित करके पूर्णता की ओर ले जाने के लिए जिन पद्धतियों या संस्थागत व्यवस्थाओं को अपनाया है, संस्कार उन्हीं में एक है। यह तो सभी जानते हैं कि हिन्दू के जीवन में धर्म का अत्यधिक महत्त्व होता है और धर्म का एक आवश्यक अंग है परिशुद्धता और पवित्रता। इसलिए हिन्दू ने भी धार्मिक आधार पर व्यक्ति के जीवन को परिशुद्ध तथा पवित्र बनाने के उद्देश्य से ही संस्कारों को जन्म दिया है। दूसरे शब्दों में, संस्कार धर्म पर आधारित वे पद्धतियाँ हैं, जिनके द्वारा व्यक्ति के जीवन को परिशुद्ध व पवित्र बनाने का प्रयत्न किया जाता है जिससे कि वह मुक्ति या मोक्ष की दिशा में अधिक अग्रसर हो सके।***

***कुंजीभूत शब्द– व्यक्तिगत, सामाजिक जीवन, सुव्यवस्थित, संस्थागत व्यवस्थाओं, संस्कार, अत्यधिक महत्त्व, दैहिक संस्कार***

**संस्कार का अर्थ–** संस्कार शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है। संस्कार का शाब्दिक अर्थ शुद्धि, सुधार या सफाई है। अतः हम कह सकते हैं कि जीवन को परिशुद्ध करने के लिए समुचित ढंग से किये गये कार्य–पद्धति को ही संस्कार कहते हैं। इसी शाब्दिक अर्थ के आधार पर ही हिन्दू संस्कार से आत्मा का परिशुद्धन समझते हैं। संस्कार वे कृत्य हैं, जो परम्परागत रूप में जन्म से लेकर मृत्यु तक हिन्दुओं में आवश्यक होते हैं क्योंकि इनके बिना जीवन की परिशुद्धि तथा आत्मा की उन्नति सम्भव नहीं है।

डॉ० राजबली पाण्डेय ने लिखा है, "संस्कार का अभिप्राय शुद्धि की धार्मिक क्रियाओं तथा व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक परिष्कार के लिए किये जाने वाले अनुष्ठानों से है, जिससे वह (व्यक्ति) समाज का पूर्ण विकसित सदस्य हो सके।" और भी संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि संस्कार का अर्थ उन "पवित्र अनुष्ठानों से है, जो शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक परिष्कार के लिए किये जाते हैं।" इस अर्थ में संस्कार जन्म से मृत्यु तक जीवन के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित कृत्यों की एक जटिल प्रक्रिया होती है। जैसा कि डॉ० पाण्डेय ने लिखा है, "हिन्दू संस्कारों में अनेक आरम्भिक विचार, धार्मिक विधि–विधान, उनके सहवर्ती नियम तथा अनुष्ठान भी सम्मिलित हैं, जिनका उद्देश्य केवल औपचारिक दैहिक संस्कार ही न होकर, व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का परिष्कार, शुद्धि एवं पूर्णता भी है।"

हिन्दूओं का सम्पूर्ण जीवन इन्हीं संस्कारों से घिरा हुआ होता है, जो कि व्यक्ति के जन्म से पहले ही प्रारम्भ हो जाता है और वह इस अर्थ में कि बच्चा उत्पन्न होने से पहले ही गर्भवती मां को अनेक प्रकार के संस्कारों को करना पड़ता है। संस्कारों को इतना महत्त्व दिया जाता है कि यह विश्वास किया जाता है कि संस्कारों को किये बिना व्यक्ति का जीवन कदापि पूर्ण नहीं होता। आत्मा की परिशुद्धि एवं जीवन को बाधामुक्त करना ही संस्कार का प्रमुख उद्देश्य होता है। अनेक संस्कारों में यज्ञ या हवन आदि का विधान है।

उसी प्रकार संस्कार में उपकरण के रूप में अग्नि, जल एवं मंत्र आदि को काम में लाया जाता है जिससे कि अशुभ का नाश और शुभ का शुभागमन सम्भव हो। मंत्रों का उच्चारण, दण्ड का धारण, पुरोहित द्वारा देव रूप में आशीर्वाद देना– इन सभी का उद्देश्य अशुभ का नाश है। दूसरी ओर, पुरोहित द्वारा शुभ घड़ी में अनुष्ठान, देवी–देवता व पितरों को आमंत्रण, मंत्रों का उच्चारण, पाठ आदि के माध्यम से शुभ शक्तियों का आवाहन भी किया जाता है जिससे कि व्यक्ति का जीवन न केवल परिशुद्ध हो अपितु बाधा–विघ्न से भी विमुक्त हो। अतः स्पष्ट है कि आत्मा को परिशुद्ध करने एवं जीवन को विघ्न–बाधाओं से विमुक्त करके उसे अधिक उन्नतशील बनाने के धार्मिक–सामाजिक कृत्यों को ही संस्कार कहते हैं।

**संस्कारों के अनेक महत्त्व हैं जिसकी चर्चा निम्नलिखित रूप से की जा सकती है :**

**(१) प्रतीकात्मक उद्देश्य या महत्त्व –** मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार की घृणा, भय, आनन्द तथा अनुराग की स्थितियाँ आती हैं। साथ ही प्रत्येक व्यक्ति इन्हें किसी न किसी तरीके से अभिव्यक्त करना चाहता है। संस्कार इन्हीं घृणा, भय, आनन्द आदि को अभिव्यक्त करने का प्रतीकात्मक साधन है। उदाहरणार्थ, बच्चें का जन्म होने पर माता–पिता को आनन्द का अनुभव होता है, क्योंकि उनकी सृजनात्मक शक्ति का साकार रूप उनके सामने होता है। अतः जन्म से सम्बन्धित संस्कार उन्हें यह अवसर देता है कि वे अपने उस आनन्द को नाना प्रकार से अभिव्यक्त करें। उसी प्रकार आत्म–परिजन की मृत्यु होने पर व्यक्ति को दुःख होता है। साथ ही वह मृत व्यक्ति के प्रति अपनी श्रद्धा को भी अभिव्यक्त करना चाहता है। अन्त्येष्टि संस्कार में तेरह दिन का अशौच शोक का प्रतीक है, जबकि श्राद्ध आदि मृत व्यक्ति के प्रति श्रद्धा का प्रतीक बन जाता है। अतः हम

**अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

कह सकते हैं कि संस्कारों का प्रतीकात्मक उद्देश्य या महत्त्व भी कम नहीं है।

**(२) विपत्ति से रक्षा–** संस्कारों का दूसरा उद्देश्य या महत्त्व यह है कि इसके माध्यम से व्यक्ति अपनी तथा अपने आत्म–परिजनों की अनेक सम्भावित विपत्तियों से रक्षा करने का प्रयत्न करता है। इसीलिए संस्कार में उपकरण के रूप में अग्नि, जल एवं मंत्र आदि ऐसे उपादानों का प्रयोग किया जाता है जो अशुभनाशक हैं। उसी प्रकार पुरोहित संस्कार सम्बन्धी अनुष्ठान शुभ घड़ी में देवता तथा पितरों को आमन्त्रित करके करता है। इन सबका उद्देश्य भूत, प्रेत, चुड़ैल तथा बुरी आत्माओं से अपनी तथा अपने परिवार की रक्षा करना है। गर्भाधान संस्कार में पुरुष अपने शुक्र को विधिवत् एवं उचित समय पर स्त्री के गर्भ में रखता है, जिसका कि उद्देश्य निर्बल, कुरूप, विकलांग अथवा मरी हुई सन्तान होने से बचना है। उसी प्रकार पुंसवन संस्कार में स्त्री के दाहिनें नासिका पुट में वट वृक्ष का दूध डाला जाता है जिससे कि गर्भपात न हो। जातकर्म संस्कार बच्चे के जन्म के तत्काल बाद बच्चें को अनेक अनिष्टकारी प्रभावों से बचाने के लिए किया जाता है। उसी प्रकार दाह–संस्कार के बाद राख को गंगा या अन्य किसी पवित्र नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है। इसके पीछे स्वास्थ्य के दृष्टिकोण के साथ–साथ अशुभ प्रभावों से रक्षा की भी बात है।

**(३) सामाजिक स्थिति की प्राप्ति–** संस्कार व्यक्ति का समाजीकरण करके उसे निश्चित सामाजिक स्थिति प्राप्त करने में मदद करता है। उदाहरणार्थ, हिन्दू–मान्यता के अनुसार जब व्यक्ति प्राणिशास्त्रीय जन्म लेता है तब वह, चाहे वह किसी भी वर्ण या वंश का क्यों न हो, शूद्र ही होता है और फिर सामाजिक संस्कार द्वारा शुद्ध होकर 'द्विज' कहलाता है। यह संस्कार यज्ञोपवीत का है। यज्ञोपवीत से पूर्व सभी शूद्र हैं। उसी प्रकार नामकरण संस्कार के बाद ही व्यक्ति का एक सामाजिक परिचय नाम के माध्यम से स्पष्ट होता है, उपनयन संस्कार के बाद ही उसे गुरुकुल में जाकर वेदारम्भ करने का अधिकार प्राप्त होता है और विवाह संस्कार के बाद ही न केवल पति या पत्नी की स्थिति प्राप्त होती है अपितु उन्हें गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने, यौन सम्बन्ध स्थापित करने तथा सन्तानों को जन्म देने का भी अधिकार प्राप्त होता है। गर्भाधान संस्कार के बाद ही कोई व्यक्ति पिता बन सकता है। श्री दुबे ने लिखा है कि संस्कारों के द्वारा इस प्रकार की स्वीकृति जहाँ व्यक्ति के लिए एक अनुष्ठान एवं नैतिक उत्तरदायित्व के रूप में थी वहाँ समाज की दृष्टि से उसे एक भिन्न स्थिति या पद प्राप्त होता था।

**(४) समाजीकरण–** संस्कार व्यक्ति के समाजीकरण की प्रक्रिया में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण साधन है। श्री दीक्षित ने लिखा है कि संस्कार व्यक्तियों को अनुशासित एवं दीक्षित करने के सफल एवं सशक्त माध्यम हैं। संस्कारों के माध्यम से व्यक्ति को संस्कृति के मूलभूत सिद्धान्तों को समझाना सरल हो जाता है। संस्कृति के प्रतिमानों को जानना मात्र ही कुछ नहीं यदि उनका दिन–प्रतिदिन के जीवन में उपयोग नहीं किया गया। संस्कारों के माध्यम से इन मूल्यों एवं प्रतिमानों का अभ्यास कराया। जाता है । अभ्यास के द्वारा व्यक्ति बिना किसी कठिनाई के अपने को सामाजिक मूल्यों एवं मान्यताओं के अनुकूल बना लेता है। इस प्रकार संस्कार व्यक्ति के समाजीकरण में सहायक होता है।

**(५) सांसारिक सुख समृद्धि–** संस्कारों का एक अन्य उद्देश्य सांसारिक सुख समृद्धि प्राप्त करना है। प्रायः प्रत्येक संस्कार में ही ईश्वर की पूजा, हवन आदि करने का विधान है। संस्कार का एक लक्ष्य ईश्वर को प्रसन्न करना है और ईश्वर प्रसन्न होने पर हमारे परिवार का कल्याण होगा, हमारे बच्चे स्वस्थ एवं सुखी रहेंगे, आर्थिक दृष्टि से सफलता प्राप्त होगी और हमारी मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी। इस प्रकार संस्कारों के माध्यम से जहाँ हम एक ओर अपने परलोक को सुरक्षित करते हैं। वहाँ इस लोक में अधिकतम सुख समृद्धि की भी याचना करते हैं, चाहे वह अपने लिए अथवा अपने आत्मपरिजनों के लिए ही हो।

**(६) आध्यात्मिक उन्नति–** संस्कारों का एक उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नति करना भी होता है। संस्कारों के माध्यम से वह अपने शारीरिक, बौद्धिक व सामाजिक जीवन को परिष्कृत, परिशुद्ध एवं पवित्र बनाने का प्रयत्न करता है। इससे उसकी आध्यात्मिक उन्नति स्वतः ही होती है। आध्यात्मिक उन्नति हमारे कर्मों पर आधारित होती है। संस्कार पवित्र एवं सद्कर्मों पर बल देकर आध्यात्मिक उन्नति का पथ प्रशस्त करता है। इस प्रकार संस्कार के द्वारा जीवन का चरम व परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति सम्भव होती है। डॉ० राजबली पाण्डेय ने उचित ही लिखा है कि "संस्कार एक प्रकार से आध्यात्मिक शिक्षा के लिए क्रमिक सीढ़ियों का कार्य करते हैं। उनके द्वारा संस्कृत व्यक्ति यह अनुभव करता है कि सम्पूर्ण जीवन वस्तुतः संस्कारमय है और सम्पूर्ण दैहिक क्रियाएँ आध्यात्मिक ध्येय से अनुप्राणित हैं। यही वह मार्ग था जिसके द्वारा क्रियाशील सांसारिक जीवन का समन्वय आध्यात्मिक तथ्यों के साथ स्थापित किया जाता था।"

आधुनिक समय में पाश्चात्य संस्कृति व सभ्यता के उत्तरोत्तर प्रभाव के साथ ही साथ औद्योगीकरण व नगरीकरण के फलस्वरूप धर्म का महत्त्व व्यक्ति के जीवन में कम होता जा रहा है। इसका स्वाभाविक परिणाम संस्कारों का महत्त्व घटना है। आज का हिन्दू संस्कारों को न तो अधिक महत्त्व देता है और न ही उसे विधिवत् मूल रूप में अनुष्ठित करता है। आधुनिक समय में अनेक संस्कारों को या तो त्याग दिया गया है अथवा उन्हें आवश्यकतानुसार संशोधित करके स्वीकार किया जाता है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

उदाहरणार्थ, गर्भाधान संस्कार को शायद ही अब कोई मानता है। उसी प्रकार सीमन्तोंन्नयन संस्कार का प्रचलन भी आज 'ना' के समान है। निष्क्रमण संस्कार को भी आज व्यर्थ का माना जाता है। उसी प्रकार अन्नप्राशन, पट्टी–पूजन, विवाह आदि संस्कारों को भी समय एवं परिस्थिति के अनुसार संशोधित व संक्षिप्त करने की प्रवृत्ति आज देखने को मिलती है। यह प्रवृत्ति अच्छी है अथवा बुरी, यह दूसरा प्रश्न है, पर परिवर्तित परिस्थितियों में इस झुकाव को रोका नहीं जा सकता। किसी भी गतिशील समाज का शायद यही नियम है!

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मुकर्जी, आर०एन०, (1992) : भारतीय समाज एवं संस्कृति,विवेक प्रकाशन, नई दिल्ल्ली ।
2. पाण्डेय, राजबली, (1966) : हिन्ध्दू संस्ध्कार सामाजिक तथा धार्मिक अध्ययन, चौखम्भा विद्या भवन, वारणसी ।
3. सर्वपल्ली, राधाकृष्णन, (1966): धर्म और समाज, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली ।
4. त्रिपाठी, शंभू रत्न (1963) : भारतीय संस्कृति और समाज, किताब घर, आचार्य नगर, कानपूर ।
5. सिंह, नारायण : हमारा धर्म और उसकी वैज्ञानिक रूप–रेखा, हिन्ध्दू साहित्य सम्ध्मेलन, प्रयाग ।

*****